अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

अध्याय प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

किसी भी समाज के विकास की प्रक्रिया में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस शिक्षा से व्यक्ति का सर्वांगिण विकास होना आवश्यक है। 1937 में वर्धा शिक्षण योजना में सर्व सम्मुख रखी गई 3H यह संकल्पना सही मायनों में व्यक्ति के सर्वांगिण विकास की दृष्टि से रखी गई थी।

मानव के शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक उत्कर्ष का विकास व अभिव्यक्ति की शिक्षा है आधुनिक युग में विज्ञान तंत्रज्ञान का विकास होता गया शिक्षा में विभिन्न बदलाव आते गए जैसे शिक्षा में संगणक का सदुपयोग, इंटरनेट जैसी आधुनिक तकनीक का प्रयोग आदि। साथ ही विद्यार्थियों के शरीरिक विकास की दृष्टि से भी तांत्रिक शिक्षा का प्रमुख विचार किया गया। 1937 में वर्धा शिक्षण योजना में शिक्षा के अनेक उद्देश्यों में एक उद्देश्य महात्मा गाँधी द्वारा सुझाया गया स्वावलंबी शिक्षा था। महात्मा गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का रूप अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत है शिक्षा बालक में सभी प्रकार की क्षमताओं का विकास करती है। गाँधी जी ने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है कि "सच्ची शिक्षा वह है जो बालकों की आत्मिक, बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं को अंदर से बाहर प्रकट करती है एवं उत्तेजित करती है।" गाँधी जी शिक्षा का अर्थ शरीर, बुद्धि, भावना और आत्मा के पूर्ण विकास को मानते है। उनका मानना था कि हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली का विकास करना चाहिए जिसमें बच्चे अपनी पढ़ाई पूर्ण कर आत्मनिर्भर बन सकें। महात्मा गाँधी ने प्रस्तुत किए इस विचार का सर्वाधिक प्रभाव पद्मभूषण डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील के विचारों पर दिखाई देता है।

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद 'स्वावलंबी शिक्षा' इस संकल्पना को साकार रूप प्रदान करने का काम डॉ.कर्मवीर भाऊराव पाटील ने ही किया। कर्मवीर भाऊराव ने अपनी रयत शिक्षा संस्था में गरीब, दीन–हीन छात्रों को जो सिर्फ पैसों के अभाव के कारण शिक्षा नहीं ले सकते थे उनके लिए सर्वप्रथम वर्ष 1947 में प्रायोगिक उद्देश्य से छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा में स्वावलंबी

शिक्षा योजना का प्रारंभ किया। इसी योजना का दूसरा नाम था 'Earn and Learn' अर्थात 'कमाओ और सीखो।'

डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील महाराष्ट्र के अन्य शिक्षाविदों की तरह ही एक शिक्षा विद्वान थे। उनका जन्म 22 सितम्बर 1887 को कोल्हापुर जिले के कुंभोज गाँव में पायगौंडा पाटील व गंगूबाई नामक दाम्पत्य परिवार में हुआ। अध्ययन में अरूचि के कारण भाऊराव ने छटवीं कक्षा में ही शिक्षा को पूर्ण विराम दे दिया। छटवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने वाले भाऊराव ने भविष्य में रयत शिक्षण संस्था की स्थापना की और हजारों छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया और बहुत से छात्रों को शिक्षा के लिए विदेश भेजा। भाऊराव की यह असफलता ही भावी जीवन में उनकी सफलता में सहायक सिद्ध हुई। जब उन्होंने स्कूल की पढ़ाई बीच में छोड़ दी उस समय वे अठारह वर्ष के थे। तब भाऊराव का विवाह कुंभोज (जिला कोल्हापुर) के पाटील की पुत्री आदक्का (विवाहोपरान्त लक्ष्मीबाई) के साथ हुआ। भाऊराव किर्लोस्कर नाम कारखाने में हल विक्रेता बन गये। कंपनी के विक्रय प्रतिनिधि होने के कारण भाऊराव को महाराष्ट्र के कोने कोने में जाने का मौका मिला। इस दरम्यांन उन्होंने लोगों की गरीबी को अपनी आँखो से देखा उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि अज्ञान ही गरीबी का मूल कारण है अतः लोगों को सज्ञान करना आवश्यक है। इस बात से प्रेरित होकर उन्होंने अपने आगे का संपूर्ण जीवन शैक्षिक कार्य के प्रति समर्पित कर दिया।

भाऊराव सत्यशोधक समाज के वक्ता थे। पूरे महाराष्ट्र का भ्रमण करने के उपरान्त उन्होंने पिछड़े वर्ग को शिक्षा सुविधा प्रदान करने का निश्चय किया था। सत्यशोधक समाज की एक परिषद सन् 1919 में महाराष्ट्र के सातारा जिले में स्थित काले नामक गाँव में आयोजित की गई थी। इस परिषद में भाऊराव भी सम्मिलित हुए थे। उन्होंने परिषद को संबोधित करते हुए कहा "जलसो और सभाओं के माध्यम से हम अपने विचार लोगो तक पहुँचा सकते है किंतु इससे जनता में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता । अतः आम जनता के बच्चों की शिक्षा के लिए एक शिक्षा संस्था की स्थापना करना अत्यंत आवश्यक है।" परिषद में कर्मवीर जी ने 'रयत शिक्षा संस्थान' के स्थापना की घोषणा की और साथ ही सभी जाति धर्म के बच्चों के लिए

छात्रावास भी सुरू करने का निश्चय किया। भाऊराव ने इस संस्था के निम्न लिखित उद्देश्य निर्धारित किए–

1. पिछड़े वर्ग के बच्चों को निशुल्क शिक्षा देना।
2. उनमें शिक्षा के प्रति लालसा जागृत करना।
3. जाति–पाँति का भेदभाव दूर करना।
4. छात्रों को स्वावलंबी, मितव्ययी तथा परिश्रमी बनाना।

रयत शिक्षण संस्था का घोष वाक्य बनाते हुए भाऊराव ने कहा था कि 'स्वावलंबन से शिक्षा हमारा उद्देश्य है, श्रम हमारी पूजा है और श्रम के बदले मुफ्त शिक्षा यही हमारा नारा है।' भाऊराव विशिष्ठ शिक्षा पद्धति प्रचलित करने का प्रयास कर रहे थे। भूमि और श्रम से जोड़कर शिक्षा पद्धति की धारा को नया मोड़ देना चाहते थे। स्वावलंबन पर आधारित शिक्षा का नया आदर्श स्थापित करना चाहते थे। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक छात्र को अपने श्रम के बल पर ही शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ छात्रों के लिए जीवन शिक्षा भी आवश्यक है। श्रम योजना की इस नयी शिक्षा पद्धती को प्रचलन में लाने का उन्होंने प्रयास किया। सन् 1947 में सातारा में छत्रपति शिवाजी कॉलेज की स्थापना हुई और इसी कॉलेज की स्थापना के साथ भाऊराव ने स्वावलंबी शिक्षा योजना (Earn and Learn Scheme) की स्थापना की। इस योजना के अंतर्गत छात्रों को विविध प्रकार के कार्य जैसे पत्थर तोड़ना, पशुपालन, खेती बारी, पुर चलाना, सब्जियाँ उगाना और बेचना, खुदाई करना, इमारतों के निर्माण में काम करना, ईंटे बनाना आदि कार्य करने पड़ते थे जिनके बदले उनकी शिक्षा का संपूर्ण खर्चा संस्था द्वारा उठाया जाता था। छात्र अपने श्रम के बलबुते पर ही अपनी शिक्षा पूर्ण करते थे। भाऊराव ने छात्रों को केवल कमाओ और सीखों (Earn and Learn) श्रम पूजा का मंत्र दिया।

आज मँहगाई के दिनों में यह मंत्र बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। आज भी समाज में अर्थाभाव के कारण शिक्षा से वंछित समूह की तादात अधिक है इस परिस्थिति में भाऊराव द्वारा स्थापित स्वावलंबी शिक्षा योजना उनके लिए एक वरदान साबित होती है। रयत शिक्षण संस्थान का विस्तार हुआ उसकी शाखाएँ महाराष्ट्र के हर एक कोने में पाई जाती है।

तालिका क्रमांक -1.1

रयत शिक्षण संस्थान की शाखाओं का विस्तार

क्र.	शाखा प्रकार	मध्य विभाग	दक्षिण विभाग	उत्तर विभाग	पश्चिम विभाग	रायगड विभाग	कुल
1	पूर्व प्राथमिक	4	3	2	5	6	20
2	प्राथमिक	6	2	7	6	6	27
3	माध्यमिक व उच्च माध्यमिक	129	83	123	68	35	438
4	महाविद्यालय	19	7	7	4	4	41
5	अध्यापक विद्यालय	3	3	1	-	1	8

रयत शिक्षण संस्थान की उपर्युक्त शाखाओं में से अधिकतम शाखाओं में स्वावलंबी शिक्षा योजना सुरू है। जिसके माध्यम से अर्थाभाव के कारण शिक्षा पूरी न कर सकने वाले विद्यार्थी स्वावलंबन के बल पर अपनी शिक्षा पूरी कर रहें है।

1.2 शोधकार्य से संबंधित शब्दों की परिभाषा

शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में शोध संपादन करने में विशिष्ट तकनीकी शब्दों एवं शोध यंत्रो का प्रयोग किया जाता है, जो सामान्यतः अधिकांश पाठक आसानी से समझ नहीं पाते है। अतः शोधकार्य का लाभ सामान्य पाठकों तक पहुँचाने के लिए एवं शोध अंगो को आसानी से समझाने के लिए आवश्यक है कि कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण किया जाए।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में प्रयुक्त किए गए कुछ मुख्य शब्दों का परिभाषीकरण शोधकर्ता द्वारा इस प्रकार किया गया है।

1. स्वावलंबी शिक्षा योजना

महाराष्ट्र के समाजसेवी पद्मभूषण प्राप्त डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील द्वारा स्थापित रयत शिक्षा संस्थान की एक ऐसी शिक्षा योजना जिसमें अर्थाभाव कारणवश शिक्षा पूर्ण न कर सकने वाले विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है। विद्यार्थी यहाँ खेती, भोजनालय, पुस्तकालय, प्रशासकीय कार्यालय

आदि जगहों पर श्रम करते है साथ ही अपनी शिक्षा भी पूर्ण करते है। इस योजना द्वारा शिक्षा पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों को स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थी कहा जा सकता है।

2. मानसिक योग्यता

उद्देश्य की पूर्ति हेतु अथवा किसी मानसिक प्रश्न को हल करने के लिए हमारे मन में प्रत्यक्ष वस्तुओं एवं विचारों में संगत गुणों तथा संबंधों का प्रत्यक्षीकरण कर सकने की योग्यता ही मानसिक योग्यता है।

प्रस्तुत शोध मे मानसिक योग्यता से अभिप्रेत अर्थ है "उन कार्यो को करने की शक्ति जिनमें कठिनाई, जटिलता, उद्देश्य प्राप्ति की क्षमता, सामाजिक मूल्य एवं मौलिकता की अपेक्षा है।

3. व्यावसायिक रूचि

वह प्रवृत्ति, जिसमें हम किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देते है, उससे आकर्षित होते हैं या सन्तुष्टि प्राप्त करते है उसे रूचि कहते है। प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयुक्त व्यावसायिक रूचि से अभिप्रेत अर्थ किसी व्यक्ति का किसी विशेष प्रकार के व्यवसाय के प्रति आकर्षण से है। व्यक्ति की व्यावसायिक रूचि उसकी स्वयं की या किसी अन्य स्त्रोत के माध्यम से किया गया सकारात्मक दृष्टिकोण है।

1.3 समस्या का कथन

"स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन।"

1.4 शोध कार्य के उद्देश्य

1. स्वावलंबी शिक्षा योजना की वर्तमान उपादेयता का अध्ययन करना।
2. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
3. अन्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।

4. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन करना।
5. अन्य विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन करना।
6. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 परिकल्पनाएँ

1. स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालक एवं अन्य बालकों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्वावलंबी शिक्षा योजना की बालिकाओं एवं अन्य बालिकाओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्वावलंबी शिक्षा योजना के बालकों एवं अन्य बालकों की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. स्वावलंबी शिक्षा योजना की बालिकाओं एवं अन्य बालिकाओं की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं है।

1.6 प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा से विचार प्रगल्भ होते है। इस शिक्षा से व्यक्ति का सर्वांगिण विकास होता है। एक समय था जब शिक्षा को एक विशिष्ट वर्ग हेतु माना जाता था मात्र आज शिक्षा पर सबका अधिकार है। हर बालक की इच्छा होती है कि वो पढ़े। उनके माता पिता को भी लगता है कि अपने बच्चे पढ़े मगर कुछ आर्थिक कारणों से वह पढ़ा नहीं सकते। मगर ऐसे बालकों को कर्मवीर भाऊराव पाटील ने स्वावलंबी शिक्षा योजना द्वारा शिक्षा के द्वार खूले किए। जहाँ बच्चे काम करके पढ़ते है। यहाँ बच्चे पढ़ने के साथ–साथ श्रम भी करते है। ऐसे विद्यार्थियों की शिक्षा लेने में उनकी मानसिक योग्यता देखकर और व्यवसाय के प्रति योग्यता देखकर हम उन विद्यार्थियों को मार्गदर्शन कर सकते है।

स्वावलंबी शिक्षा योजना में बच्चों की आयु व योग्यता को ध्यान में रखकर बच्चों को अलग-अलग काम दिए जाते है। जैसे- खेती, पुस्तकालय, भोजनालय, फोन बुथ, झेराक्स सेंटर, प्रशासनिक कार्यालय आदि। यह काम उनके सामान्य विकास में योगदान देता है साथ ही जब उसे विद्यार्थियों के जीवन पर लागू किया जाता है तो वह उनके लिए मुल्यों, बुनियादी, वैज्ञानिक अवधारणाओं, कौशलों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा अपनी एक अस्मिता पाते है और स्वयं को उपयोगी और महत्वपूर्ण समझते है क्योंकि काम उनको अर्थवान बनाता है और इसके माध्यम से वे समाज का हिस्सा बनते हैं और ज्ञान के निर्माण में सक्षम हो पाते है।

श्रम करने वाले विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता देखकर उनको योग्य प्रशिक्षण दिया जाये तो वह विद्यार्थी अपना कार्य भी करेगा और पढ़ाई भी करेगा। स्वावलंबी शिक्षा योजना में विद्यार्थियों को व्यवसायाभिमुख काम कराए जाते है। कैंटीन चलाना, टेलीफोन बुथ झेराक्स सेंटर, पुस्तकालय, भोजनालय इस प्रकार के काम से संलग्न प्रशिक्षण देकर उनमें हम आत्मविश्वास दिला सकते है। अन्य विद्यार्थियों में भी व्यवसाय के प्रति रूचि दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध द्वारा हम देख सकते हैं कि कितने श्रम करने वाले विद्यार्थियों और अन्य विद्यार्थी व्यवसाय में रूचि रखते है।

जिन विद्यार्थियों में व्यवसाय की योग्यता पायी जाएगी, उन विद्यार्थियों के माता-पिता और शिक्षक से मिलकर हम उनके परिस्थितिनुसार हम उन्हें शैक्षिक व्यवसाययिक प्रावधानों के प्रस्ताव कर सकते है। ताकि भविष्य में यह बच्चे अपने भविष्य के रोजगार या आजिविका की तैयारी अच्छे ढंग से कर सके। जिससे वर्तमान में शिक्षित बेरोजगारी का प्रतिशत भी कम हो जाएगा।

1.7 अध्ययन का सीमांकन

किसी भी अनुसंधान या शोध कार्य की विश्वसनीयता एवं शुद्धता के लिए आवश्यक है कि इसका एक निश्चित क्षेत्र हो इससे शोधकार्य व्यवस्थित एवं सटीक होता है, जिसके परिणाम विश्वसनीय होते है।

1. प्रस्तुत शोधकार्य महाराष्ट्र में स्थित सातारा जिले तक सीमित है।

2. शोधकार्य में सातारा जिले में स्थित उन दो उच्च माध्यमिक विद्‌यालयों तक सीमित रखा गया जहां स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्‌यार्थी एवं अन्य विद्‌यार्थी एक साथ पढ़ते है।

3. अध्ययन हेतु कक्षा ग्यारहवी में अध्ययनरत 160 बालक–बालिकाओं को चुना गया। जिसमें स्वावलंबी शिक्षा योजना के 40 बालकों और 40 बालिकाओं तथा अन्य 40 बालक और 40 बालिकाओं का समावेश किया गया।